दिसम्बर २०१३

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

सुख या दु:ख मान्यता से ही!

संपादकीय

बालमित्रों,

वास्तव में देखें तो बाहर से कोई भी सुख या दुःख देने नहीं आता, लेकिन हमारी सीधी या उल्टी मान्यताएँ ही हमें सुख या दुःख देती हैं।

विश्वास नहीं आता? तो इस अंक को ज़रूर पढ़ना। इस अंक को पढ़ने के बाद तुम्हें ज़रूर लगेगा कि सुखी या खुश रहना कितना आसान है!

परम पूज्य दादाश्री ने इसका सुंदर विश्लेषण किया है। दादाश्री की समझ को छोटी-छोटी कहानियों द्वारा इसमें प्रकाशित किया गया है, जिससे समझने में सरलता होगी और सही मान्यता को समझकर खुश रहना आपको भी आ जाएगा।

- डिम्पल महेता

अक्रम एक्सप्रेस

अनुक्रमणिका

३ दादाजी कहते हैं...मान्यता का दुःख
४ उनका स्वर्ग
८ लकी/अनलकी मान्यता? ज्ञानी कहते हैं....
९ लकी कॉइन
१२ स्वामी विवेकानंद की निडरता
१३ पॉज़िटिव दृष्टि से नुकसान में भी फायदा, ज्ञानी कहते हैं.....
१४ दृष्टि का चश्मा
१६ पॉज़िटिविटी का पावर
१९ फोटो दुनिया

सुख या दुःख मान्यता से ही!

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ९
अखंड क्रमांक : ९
दिसम्बर २०१३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...
मान्यता का दु:ख

दादाश्री : यह जो दु:ख है, वह उल्टी समझ का है। यदि सही समझ फिट करें तो दु:ख जैसा कुछ है ही नहीं। यदि अपना पैर पक गया हो तो हमें पता लगाना चाहिए कि मेरे जैसा दु:ख लोगों को है या नहीं? अस्पताल में जाकर देखें तब मालूम पड़ेगा कि ओहोहो! दु:ख तो यहाँ है। मेरे पैर में तो थोड़ा सा ही है और मैं यों ही दु:खी हो रहा हूँ। इसका पता तो लगाना पड़ेगा न! पता लगाए बिना दु:ख मान लें तो फिर क्या हो? यह तो बिना सोचे मान लिया है कि यह दु:ख है, यह दु:ख है!

यदि मैं न्यायाधीश होऊँ तो सभी को सुखी करके सज़ा दूँ। अगर किसी को उसके गुनाह की सजा देनी हो तो पहले मैं उसे कहूँगा कि पाँच साल से कम की सजा हो ही नहीं सकती। फिर जब वकील कम करने को कहेगा, तब ४ साल, फिर ३ साल, २ साल ऐसा करते-करते अंत में छः महीने की सज़ा दूँ। इससे वह जेल में तो जाएगा लेकिन सुखी होकर। मन में खुश होगा कि छः महीने में पूरी हो जाएगी। यदि उसे पहले ही ऐसा कहा होता कि छः महीने की सज़ा होगी तो उसे वह बड़ी लगती। यह तो मान्यता का ही दु:ख है।

कैसी मज़ेदार बात है, दादाश्री की! कि चोर जेल में जाए तो भी खुश होकर जाए! आगे दी गई कहानी में मुखियाजी ने भी ऐसी ही युक्ति की और लक्ष्मी को मज़ेदार पाठ पढ़ाया! चलो, हम भी भीखू और लक्ष्मी की परेशानी और मुखियाजी की मज़ेदार युक्ति के बारे में पढ़ें....

यह जो दु:ख है, वह उल्टी समझ का है। यदि सही समझ फिट करें तो दु:ख जैसा कुछ है ही नहीं।

उनका स्वर्ग

भीखू नाम का किसान एक छोटी सी झोपड़ी में अपनी पत्नी लक्ष्मी के साथ रहता था। एक दिन,
भीखू, तुम्हारे चाचाजी गुज़र गए। चाचीजी बहुत दुःखी हैं। उन्होंने कहलवाया है कि तुम उन्हें यहाँ ले आओ।
क्या?! चाचीजी को यहाँ ले आऊँ ? लेकिन मैं उन्हें कहाँ रखूँगा?
मैं यह सब नहीं जानता।
बेमन से भीखू चाचीजी को अपने घर ले आया। थोड़े दिन बाद,
चाचीजी पूरी रात खर्राटे लेती हैं। इस वजह से मुझे ज़रा भी नींद नहीं आती। मुझे नहीं लगता कि हम चाचीजी को अपनी झोपड़ी में रख सकेंगे।
हाँ, उनके आने से अपना घर भी छोटा पड़ता है। रसोई में तो चलने की जगह भी नहीं रहती। आप अपने मुखियाजी की सलाह लो न। वे बहुत समझदार हैं। वे ज़रूर कोई उपाय बताएँगे।
मुखियाजी ने भीखू की बात सुनी।
भीखू, तेरे पास कोई पशु है?
हाँ मुखियाजी, एक गाय और एक बकरी है।

ठीक है, तो एक काम कर। गाय को घर में ले आ।
क्या?! घर में? लेकिन मैं उसे रखूँगा कहाँ?
घर के दरवाजे से बाँध देना। बस तेरी सभी समस्याओं का अंत आ जाएगा।
घर आकर, भीखू ने मुखियाजी का बताया हुआ उपाय लक्ष्मी को बताया।
ऐसा कहा मुखियाजी ने? मुखियाजी तो विद्वान हैं। हमें उनके उपाय को आज़माना ही चाहिए।
उसके बाद, भीखू और लक्ष्मी की ज़िंदगी बहुत ही खराब हो गई, घर में आते-जाते गाय के साथ टक्कर होती ही रहती थी। इतना ही नहीं, लेकिन गाय बैठी-बैठी उनका कम्बल भी चबा गई।
एक हफ्ते बाद,
जाओ, जाकर मुखियाजी से कहो कि अभी की स्थिति पहले से सौ गुनी ज्यादा खराब है।
मुखियाजी ने फिर से भीखू की बात ध्यान से सुनी।
तुमने कहा था न कि तुम्हारे पास एक बकरी भी है? एक काम करो, बकरी को भी घर में ले आओ।

लेकिन मुखिया जी, बकरी को कहाँ रखूँगा?
तुम्हारे पलंग के पास उसे बाँध देना। अब तो ज़रूर तुम्हारी सभी समस्याओं का अंत आ ही जाएगा।
भीखू की बात सुनकर लक्ष्मी रोने लगी।
ऐसा कहा मुखियाजी ने! मुखियाजी हम से यह क्या करवा रहे हैं?! घर में जहाँ देखो वहाँ गाय का गोबर है और अब वे कह रहे हैं कि बकरी भी घर में ले आएँ? बस, बहुत हो गया।
लेकिन, तुमने ही तो कहा था कि वे पढ़े लिखे हैं, इसलिए हमें उनकी सलाह पर अमल करने की कोशिश करनी चाहिए।
आँसू पोंछकर लक्ष्मी बकरी को घर में ले आई। लेकिन एक दिन भी उसने बहुत मुश्किल से निकाला।
दूसरे दिन लक्ष्मी भी भीखू के साथ मुखियाजी के पास गई।
मुखियाजी, कल आपने इन्हें बकरी घर में लाने के लिए कहा, उसकी पहुँच में जो था, वह सब खा गई। इतना ही नहीं.....
बहन... लेकिन.....
मुझे मेरी बात पूरी करने दें। आज मैं बहुत ही मज़बूर होकर आपके पास आई हूँ। और उसका कारण है, वह भयंकर बदबू। आप कभी बकरी के पास सोए हैं? मैंने पूरी रात एक झपकी तक नहीं ली। आप ही बताओ, अब हम क्या करें?

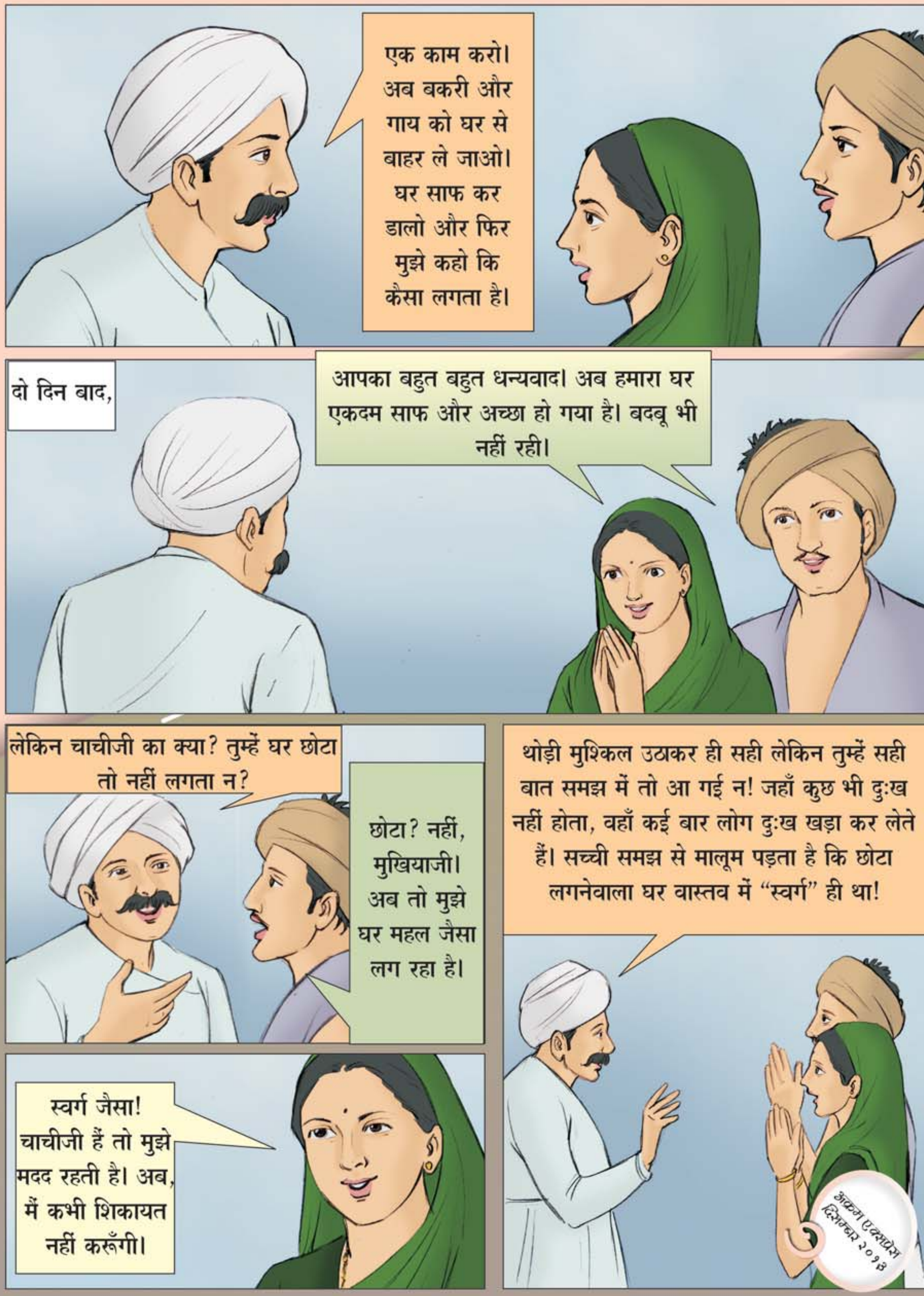
एक काम करो। अब बकरी और गाय को घर से बाहर ले जाओ। घर साफ कर डालो और फिर मुझे कहो कि कैसा लगता है।
दो दिन बाद,
आपका बहुत बहुत धन्यवाद। अब हमारा घर एकदम साफ और अच्छा हो गया है। बदबू भी नहीं रही।
लेकिन चाचीजी का क्या? तुम्हें घर छोटा तो नहीं लगता न?
छोटा? नहीं, मुखियाजी। अब तो मुझे घर महल जैसा लग रहा है।
स्वर्ग जैसा! चाचीजी हैं तो मुझे मदद रहती है। अब, मैं कभी शिकायत नहीं करूँगी।
थोड़ी मुश्किल उठाकर ही सही लेकिन तुम्हें सही बात समझ में तो आ गई न! जहाँ कुछ भी दुःख नहीं होता, वहाँ कई बार लोग दुःख खड़ा कर लेते हैं। सच्ची समझ से मालूम पड़ता है कि छोटा लगनेवाला घर वास्तव में "स्वर्ग" ही था!

लकी/अनलकी मान्यता? ज्ञानी कहते हैं....

नीरू माँ :
लोगों में कितना अंधविश्वास होता है। बात-बात में ९ नंबर लकी और १३ नंबर अपशुकन है, अनलकी है, इसका मतलब उस नंबर काम का ही नहीं है! लेकिन यदि कोई १३ तारीख को जन्मा हो तो वह क्या करे? अपने यहाँ पुरुषों में कितनी मान्यताएँ होती हैं, इस शर्ट या इस पेन्ट को लकी कहते हैं, कुछ अच्छा हो तो लक के लिए उसे ही पहनते रहते हैं। यह सब किसलिए करते हैं, तो बस आत्मविश्वास बनाए रखने के लिए।

नेगेटिव सोच आए तो उसे छोड़कर पॉज़िटिव रहने के लिए। कोई भी काम करना हो तो बुद्धि कैल्क्युलेशन करती ही रहती है। मान लो कि परीक्षाएँ आए तो, मन में ऐसा होता रहता है कि पढ़ूँगा तो याद रहेगा या नहीं रहेगा, परीक्षा के समय लिख सकूँगा या नहीं लिख सकूँगा, भूल जाऊँगा तो क्या होगा। फिर परीक्षा देने के बाद वापस शुरू हो जाता है कि पास होऊँगा या फेल होऊँगा, फेल होऊँगा तो क्या होगा। बुद्धि ऐसा नेगेटिव बताती ही रहती है। वह निर्णय पर नहीं आ सकती इसलिए फिर विश्वास भी नहीं आता। जहाँ बुद्धि नेगेटिव दिखाती है, वहाँ अपना आत्मविश्वास तोड़ देती हैं।

यदि आत्मविश्वास डेवेलप करना हो तो बुद्धि जब नेगेटिव बताए तो उसकी बात नहीं मानना। उससे कहना कि तेरी बात से मैं जरा भी सहमत नहीं हूँ, गेट आउट। पॉज़िटिव ही रहना, उससे आत्मविश्वास बहुत डेवेलप होगा।

नियम कैसा है, यदि भीतर से तुम नहीं डिगते, स्थिर रहते हो, तो ऑटोमेटिक बाहर भी काम सफल होता है। यदि भीतर से तुम अस्तव्यस्त हो गए तो बाहर परिणाम भी अस्तव्यस्त ही आएगा।

आज तो हमने नया ही सीखा कि पॉज़िटिव सोच ही आत्मविश्वास की चाबी है, लकी या अनलकी जैसा कुछ होता ही नहीं है। चलो आगे की कहानी में हम देखेंगे कि क्या श्लोक को उसका लकी कॉइन रेस जीतने में सचमुच काम आया?

लकी कॉइन

रेस शुरू होने में थोड़े ही क्षणों की देरी थी। श्लोक ने अपनी जेब में हाथ डालकर चेक किया कि वह है या नहीं? उसकी सांस में सांस आई और वह रेस के लिए तैयार हो गया।

"गो...." रेफ्री ने व्हिसल बजाकर जोर से कहा। श्लोक पूरे जोश से दौड़ा और एक ही मिनट में उसने सबसे पहले फिनिशिंग लाइन पार कर दी।

"हे...हे...जीत गया.....!!" श्लोक ने दोनों हाथ हवा में उछालते हुए जोर से आवाज़ लगाई। श्लोक को बधाई देते हुए मीरा बोली, "गुड जॉब, ब्रदर। आज की जीत का मतलब यह कि अब तुम्हें अगले महीने की चेम्पियनशिप में भाग लेने का मौका मिलेगा, राइट?"

"ओह यस, और वह भी मैं जीतनेवाला हूँ। थैंन्क्स टू दिस" अपनी जेब को थपथपाते हुए श्लोक बोला।

"थैंन्क्स टू योर पॉकेट?!" हँसते-हँसते मीरा ने पूछा। उसके चेहरे पर आश्चर्य था।

"पॉकेट नहीं, पॉकेट के अंदर जो है, उसके कारण।" ऐसा कहकर श्लोक ने एक पुराना तांबे का सिक्का अपनी पॉकेट से बाहर निकाला।

मीरा को सिक्का दिखाते हुए बोला, "यह मेरी मैजिक, लकी कॉइन है। इसके कारण ही मैं सभी रेस जीता हूँ। और भविष्य में भी यही रेस जिताएगा।"

यह सुनकर मीरा को बहुत आश्चर्य हुआ। सिर हिलाकर वह बोली, "ओह श्लोक, मुझे नहीं मालूम था कि तुम इन सभी बातों में विश्वास करते हो। तुम इस कॉइन के कारण यह रेस नहीं जीते, ये तो तुम्हारी मेहनत, लगन और ट्रेनिंग के कारण जीते हो।"

"तुम्हें मेरा विश्वास नहीं करना हो, तो मत करो, लेकिन मुझे मालूम है कि मैं इसके कारण ही जीता हूँ। और यही मुझे चेम्पियनशिप में "गोल्ड मैडल" जिताएगा" कॉइन वापस पॉकेट में रखते हुए श्लोक बोला। और बात वहीं रुक गई। दिन बीतने लगे।

रेस के लिए अब तीन ही दिन बाकी थे। मीरा रूम में अपना होमवर्क कर रही थी और श्लोक वज़न उठाकर कसरत कर रहा था। अचानक मीरा को चीख सुनाई दी।

"ओह नो..!!!" श्लोक ज़ोर से चीखा।

श्लोक को बहुत चोट लगी होगी, ऐसा समझकर मीरा तेजी से बेसमेन्ट में दौड़ी। देखा तो श्लोक पालथी लगाकर ज़मीन पर बैठा था। वह पसीने से लथपथ हो गया था।

"क्या हुआ श्लोक? कहीं लगी है? मम्मी को बुलाऊँ?" मीरा बहुत घबरा गई थी। "मुझे कुछ नहीं हुआ" मीरा का हाथ कंधे से खिसकाते हुए श्लोक बोला। "मैं प्रैक्टिस कर रहा था। अचानक मैंने पॉकेट में हाथ डाला कि मेरी मैजिक कॉइन है या नहीं... और वह नहीं थी... मैंने सब जगह ढूँढ लिया लेकिन वह कहीं भी नहीं है। अब मेरा क्या होगा? तीन दिन बाद रेस है। मुझे यदि वह कॉइन नहीं मिली तो खत्म.... रेस में जीतने का कोई चान्स नहीं है।" श्लोक टेन्शन में बोले ही जा रहा था।

यह सुनकर मीरा को श्लोक पर गुस्सा आया। "इसके लिए तू इतनी ज़ोर से चिल्लाया और मुझे डरा दिया? ऐसी बेवकूफ बात के लिए? कॉइन और रेस का क्या संबंध है?"

लेकिन श्लोक ने तो एकदम हथियार ही डाल दिए। सिर पर हाथ रखकर निराश होकर बोला, "अब जीतने का कोई चान्स नहीं है। अब मैं ज़रूर हार जाऊँगा।"

रूम में थोड़ी देर तक खामोशी रही। मीरा को समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे। वह श्लोक के पास जाकर बैठी फिर धीरे से श्लोक को समझाते हुए बोली, "जितना विश्वास, जितनी श्रद्धा तुमने उस छोटी सी कॉइन पर रखी थी, उतनी श्रद्धा तुम अपनी मेहनत और होशियारी पर रखोगे तो ज़रूर सफल हो जाओगे। तुम्हारी श्रद्धा ही तुम्हें फल देती है, वह कॉइन नहीं। पॉज़िटिव रहो और खुद पर श्रद्धा रखो। यह तुम्हारे लकी कॉइन से ज्यादा कीमती हैं। और यदि तुम हारोगे तो वह कॉइन खोने के कारण नहीं, लेकिन तुम्हारी नेगेटिव सोच के कारण हारोगे। तुम समझ रहे हो न।"

श्लोक ने सिर हिलाकर "हाँ" तो कहा लेकिन फिर भी वह मीरा की बात से पूरी तरह से सहमत नहीं था। उसे भरोसा था कि अभी तक वह उस "लकी कॉइन" के कारण ही जीतता था और उसके बिना वह हार ही जाएगा।

रेसवाले दिन तक श्लोक लकी कॉइन ढूँढता ही रहा। रेस शुरू होने में कुछ ही मिनट की देरी थी। मीरा श्लोक के पास गई, "श्लोक, पॉज़िटिव रहना और खुद पर विश्वास रखना..."

मीरा का वाक्य आधे से काटते हुए श्लोक बोला, "हाँ मीरा, तुम यह सब मुझे पहले भी कह चुकी हो। लेकिन तुझे मालूम है न कि लकी कॉइन के बिना....."

"यह ले। मैं तेरे लिए एक सरप्राइज़ लाई हूँ।" श्लोक का वाक्य आधे से काटकर उसे कॉइन देते हुए मीरा ने कहा।

"ओह वाउ मीरा! यू आर ग्रेट, तुझे मेरी लकी कॉइन मिल गई!! अब तुम देखना कि यह रेस में कैसे जीतता हूँ।" कॉइन पॉकेट में रखकर श्लोक ट्रैक पर दौड़ा।

"गेट सेट... गो!" ऐनाउन्समेन्ट होते ही श्लोक तेज़ी से दौड़ा और आसानी से रेस जीत गया। ट्रॉफी लेकर वह मीरा के पास आया।

"ग्रेट रेस श्लोक। आखिर में तुमने रेस जीतकर दिखा दिया!" श्लोक को बधाई देते हुए मीरा बोली।

"थैंन्क यू मीरा। लकी कॉइन मिल जाने के कारण मेरे अंदर एक अलग ही तरह का जोश आ गया था। अब तो तुझे विश्वास हुआ न कि लकी कॉइन सचमुच कितना लकी है?" श्लोक ने मीरा से पूछा।

सिर हिलाकर मीरा बोली, "तुम तुम्हारे लकी कॉइन को ध्यान से देखकर मुझे बताओ कि मुझे तुम पर विश्वास आना चाहिए या तुम्हें मुझ पर विश्वास आना चाहिए?"

श्लोक सोच में पड़ गया। उसने पॉकेट से मीरा का दिया हुआ कॉइन निकाला और उसे ध्यान से देखा। यह उसका लकी कॉइन नहीं था, लेकिन एक साधारण पच्चीस पैसे का कॉइन था। मीरा ने जब उसे कॉइन दिया था, तब जल्दी-जल्दी में उसने कॉइन ध्यान से देखा ही नहीं था।

श्लोक ने कॉइन पर नज़र डाली और फिर मीरा को देखा। और दोनों एक दूसरे के सामने देखकर ज़ोर से हँस पड़े।

"लकी कॉइन खोना मेरे लिए एकदम लकी बन गया! उसे खोकर मैंने मेरा आत्मविश्वास पा लिया" कॉइन जेब में रखते हुए श्लोक बोला।

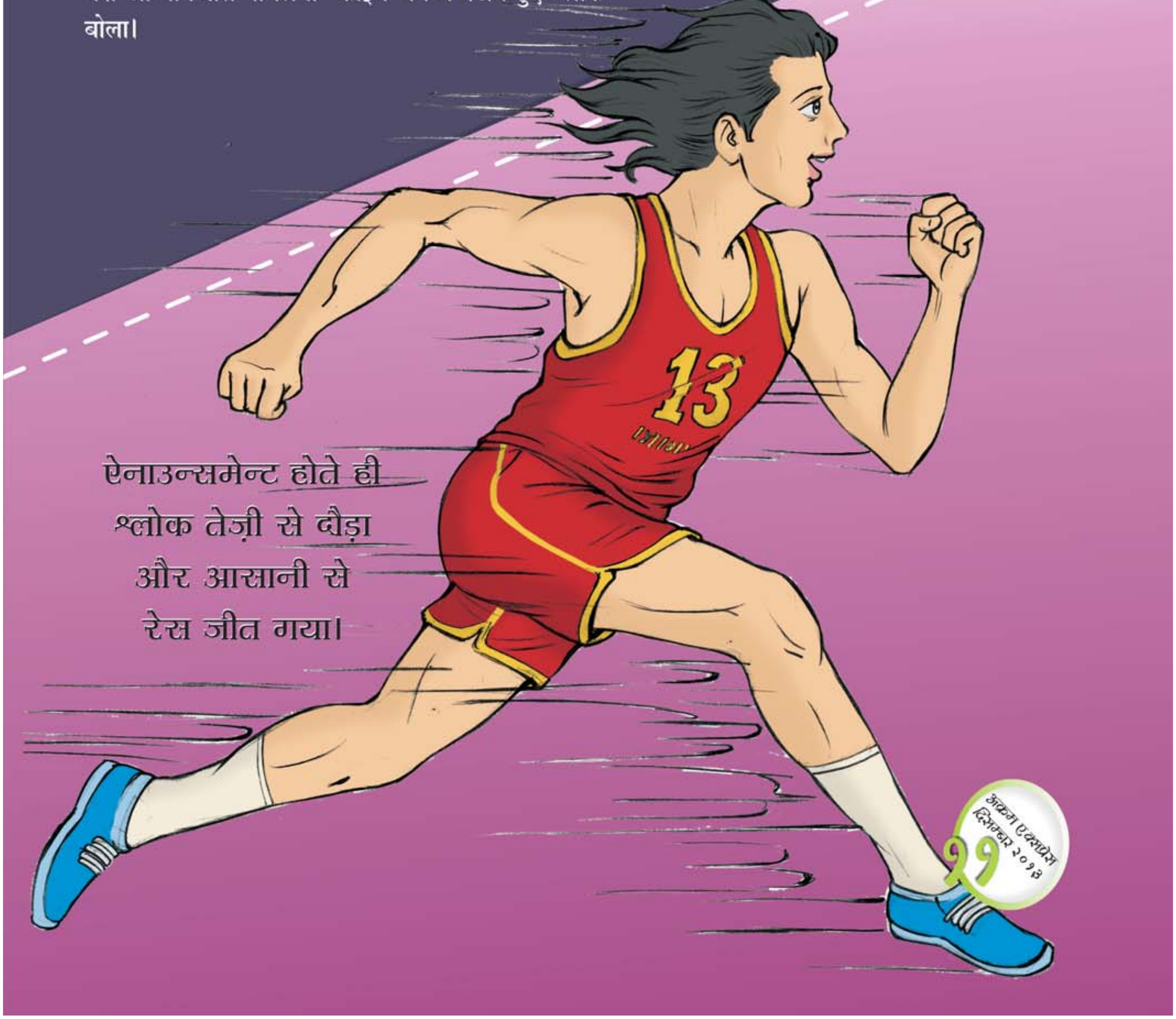

स्वामी विवेकानंद की निडरता

बचपन से ही नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद) वहम और भय से मुक्त थे। नरेन्द्र के मित्र उनके घर के पास ही रहते थे। उनके आँगन में एक पेड़ था। उसके ऊपर दोनों दोस्त चढ़ते थे और मस्ती करते थे। मित्र के दादाजी को इस बात का डर लगा रहता था कि बच्चे गिर न जाएँ।

एक दिन उन्होंने बच्चों से कहा, "बच्चों, इस पेड़ पर मत चढ़ना। इसके ऊपर एक ब्रह्मराक्षस रहता है। जो भी चढ़ता है पेड़ पर, उसकी गर्दन मरोड़ देता है।"

ऐसा कहकर दादाजी चले गए। नरेन्द्र पेड़ पर चढ़ने लगे। उस मित्र ने घबराकर कहा, "अरे नरेन्द्र, ऊपर मत चढ़ना। राक्षस गर्दन मरोड़ देगा।"

यह सुनकर नरेन्द्र खिलखिलाकर हँस पड़े और बोले, "अरे क्यों डर रहा है? दादाजी की बात सही होती तो मेरी गर्दन, उस राक्षस ने कब की मरोड़ दी होती।"

देखा मित्रो, नरेन्द्र ने अपने अंदर किसी भी तरह का भय या अंधविश्वास घुसने ही नहीं दिया और कैसे निडर रहे! आज हम भी तय करते हैं कि भूत या राक्षस जैसी किसी भी तरह के अंधविश्वास में हम नहीं फँसेंगे।

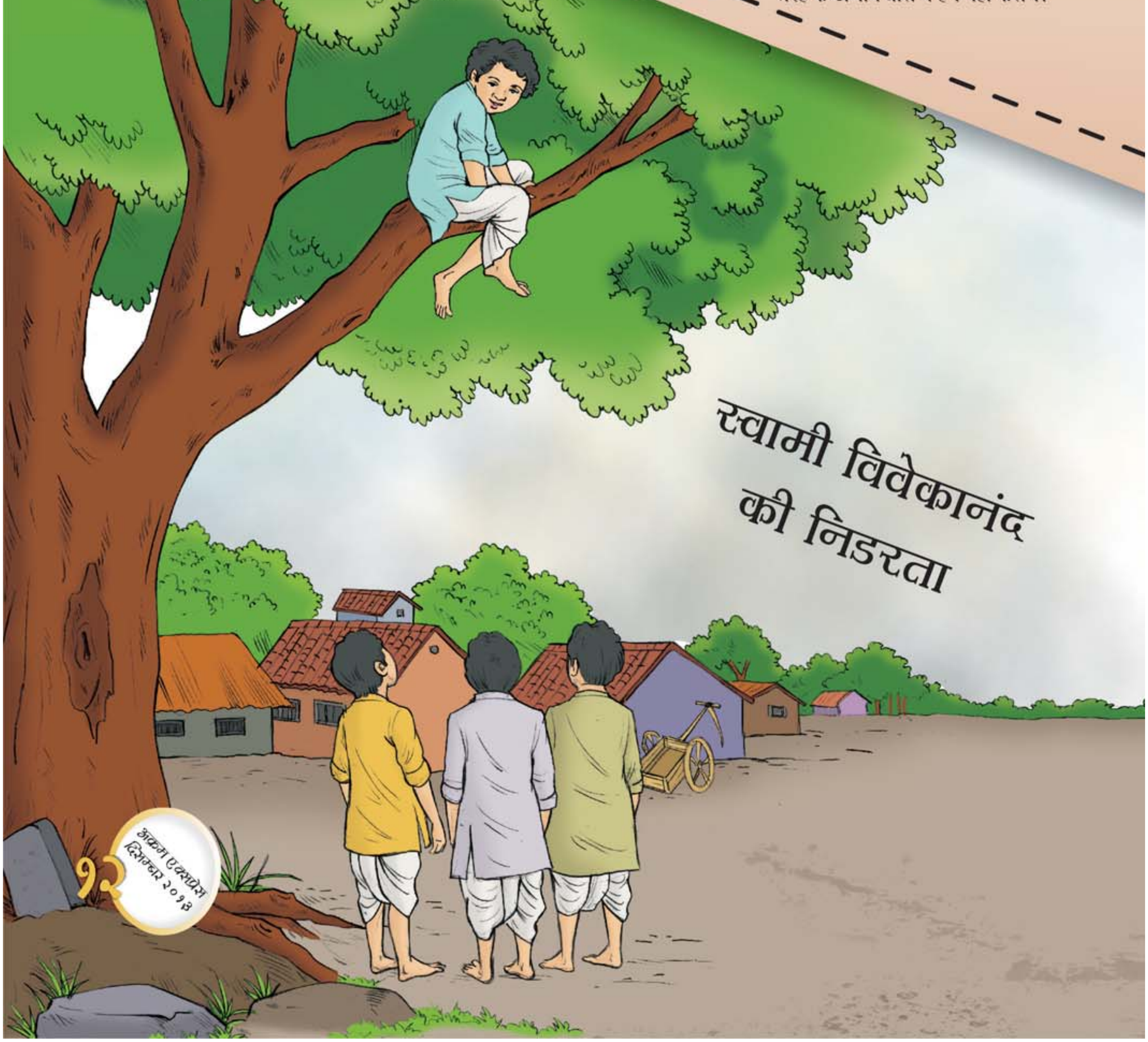

पॉज़िटिव दृष्टि से नुकसान में भी फायदा
ज्ञानी कहते हैं.....

दादाश्री : कोई ज्योतिषी हमारा हाथ देखकर कहे कि चार घातें हैं। अब उसमें से एक घात गई तो हमें खुशी होनी चाहिए कि हाश, एक तो कम हुई। उसी तरह अपमान, गाली ऐसा सब अपने पास आए तो खुशी मनानी चाहिए कि हिसाब में से एक दुःख तो कम हुआ। यदि ऐसा रहे तो ऐसा सब गायब ही हो जाएगा कि "मुझे गाली क्यों दी?"

नीरू माँ : जो मिला है, हम उस सुख को तो नहीं भोगते और बेकार की ही स्पर्धा से दुःख भुगतते हैं। स्पर्धा का दुःख मतलब अच्छे मज़ेदार बासमती चावल बनाकर ऊपर से उसमें कंकड़ डालकर खाना। यह जो दुःख है, वह नासमझी का है। नासमझी से स्पर्धा होती है और फिर दुःख, दुःख और दुःख। तीर्थंकरों ने बहुत अच्छा रास्ता बताया है कि दुःख में से सुख कैसे ढूँढ निकालें।

भगवान महावीर ने उनके शिष्यों को सिखाया कि जब तुम बाहर जाओ और लोग लकड़ी से एक दो बार मारें तो तुम्हें यह समझना चाहिए कि सिर्फ लकड़ी ही मारी न, हाथ तो नहीं तोड़े! इतनी तो बचत हुई!

दोनों हाथ काट दिए हों, तो पैर तो हैं न!

दो हाथ और दो पैर काट दें तब कहना कि मैं जीवित तो हूँ न। आँखों से दिख तो रहा है न!

लाभ ही लाभ भगवान ने दिखाया। तुम रोना मत, हँसना, आनंद में रहना। बात गलत तो नहीं है न? भगवान ने कैसी दृष्टि से देखा होगा कि जिससे नुकसान में भी फायदा दिखे? जो बचा उसका आनंद मनाएँ, गया उसे याद भी न करें।

अपने पास जो भी हो, उसे स्वीकार कर लें तो ज़रा सा भी दुःख नहीं होगा।

आगे दी गई कहानी में भाविक को भी स्पर्धा का दुःख सताता था। क्या वह इस दुःख में से बाहर निकल सका? क्या उसे कम्पेरिज़न के दुःख से बाहर निकलने की सही समझ प्राप्त हुई? चलो देखें....

दृष्टि का चश्मा

"कोंग्रेच्युलेशन भाविक! ८२%!!" वाह दोस्त वाह, आज शाम को पार्टी? भाविक के रिपोर्ट कार्ड को देखते हुए उसका बेस्ट फ्रेन्ड हर्ष उत्साह से बोला।

मुँह लटकाकर भाविक बोला, "८२% में क्या पार्टी? इस बार फिर विज्ञान में गड़बड़ हो गई।"

हर्ष ने अपने खुश मिज़ाज से भाविक के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "अरे यार, अगली परीक्षा में विज्ञान में ज्यादा मेहनत कर लेना। लेकिन इसमें रो क्यों रहा है? इंग्लिश में सबसे ज्यादा मार्क्स आए हैं, उसकी खुशी मना न।"

लेकिन जो खुशी मनाएँ, वे दूसरे। भाविक को तो अपनी तुलना दूसरों के साथ करके दुःखी होने की आदत ही पड़ गई थी। कभी तो वह किसी के बहुत अच्छे मार्क्स से दुःखी हो जाता था, तो कभी किसी की बहुत अच्छी चीज़ को देखकर कमी महसूस करता। इतना ही नहीं, लेकिन कभी-कभी ऐसा सोचकर दुखी हो जाता था कि उसके मम्मी-पापा उसकी छोटी बहन को बहुत अच्छी तरह रखते हैं।

शनिवार की दोपहर थी। हर बार की तरह हर्ष और भाविक अपने फ्रेन्ड्स के साथ बीच पर वॉलीबॉल खेलने के लिए इकट्ठे हुए। अँधेरा होने को आया इसलिए सभी अपने-अपने घर जाने के लिए रवाना हुए। हर्ष और भाविक भी अपने घर की तरफ जा रहे थे।

"मज़ा आ गया आज तो गेम में। ध्रुव कितना ज़ोरदार खेलता है न?" वॉलीबॉल को हवा में उछालकर, कैच करते हुए हर्ष बोला।

"हमम्म, पता नहीं वह कैसे इतना अच्छा खेलना सीख गया। और तूने उसके शूज़ देखे? आज उसने नाइकी के शूज़ पहने थे। कितने समय से मुझे ऐसे नाइकी के शुज़ लेने हैं। लेकिन मेरे नसीब में हैं ही नहीं," भाविक फिर से उसी उदास चेहरे के

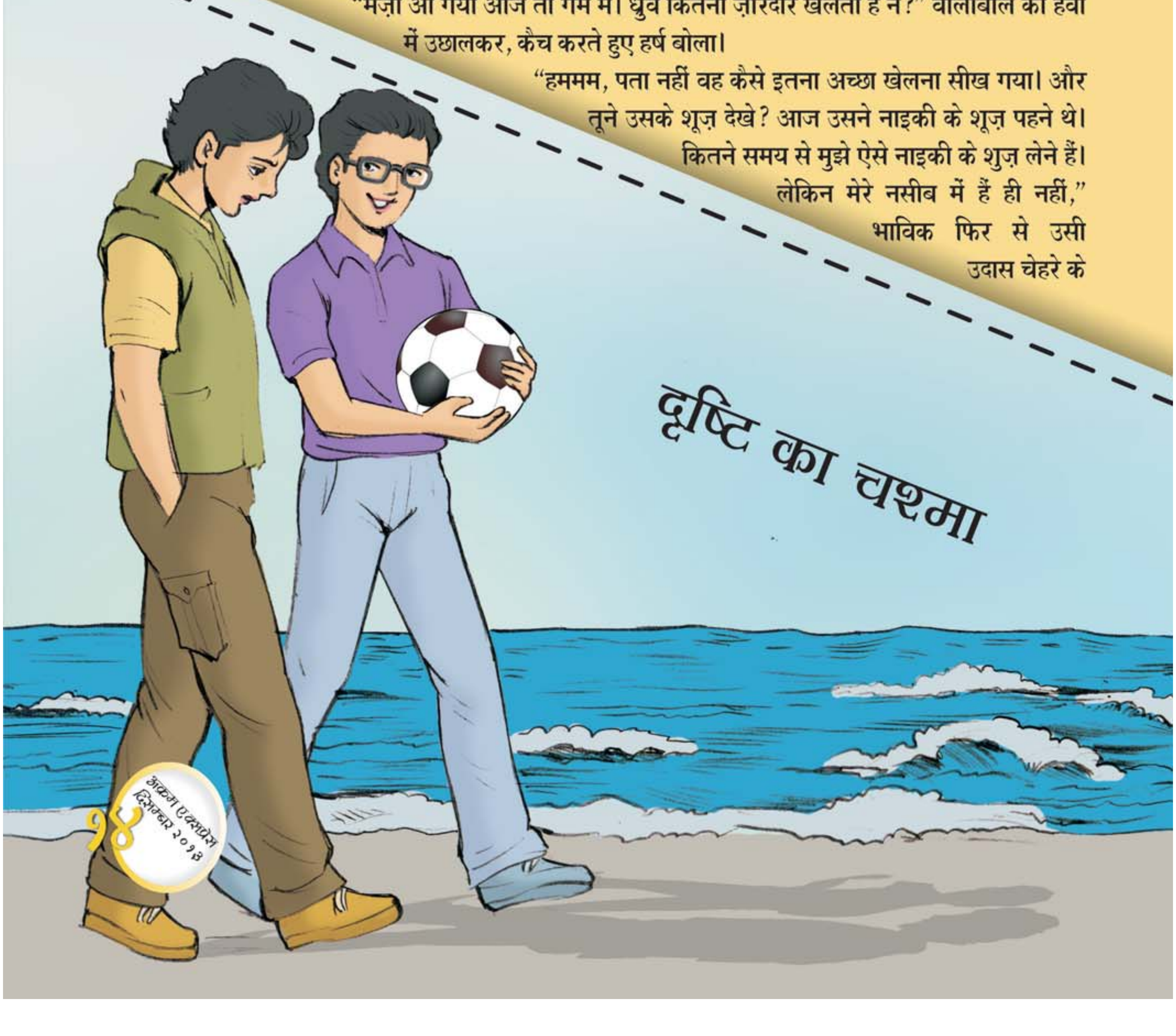

साथ बोला।

यह सुनकर हर्ष थोड़ी देर के लिए चुप हो गया। थोड़ा सोचकर उसने कहा, "भाविक, तुझे अपनी स्कूल का वह नाटक याद है? तुझे किसान का रोल मिला था और ध्रुव डॉक्टर बना था?"

थोड़ा हँसकर भाविक बोला, "हाँ, याद है। उसमें मेरी एक्टिंग की सभी ने बहुत तारीफ की थी।"

"हाँ, बहुत अच्छी एक्टिंग की थी तूने। लेकिन तू मुझे यह बता उस नाटक में तू यह देखकर दुःखी हुआ था कि ध्रुव के पास स्टेथेस्कोप है और तेरे पास नहीं?" हर्ष ने गंभीरता से पूछा।

"कैसी उटपटांग बात पूछता है तू? मैं क्यों ऐसा देखूँ? मेरे रोल में स्टेथेस्कोप की ज़रूरत ही कहाँ थी? वह तो रोल के हिसाब से ही चीज़ें मिली थीं।" हर्ष के प्रश्न का जवाब देते हुए भाविक बोला।

"हाँ, सही बात कह रहा है तू भाविक। जैसे उस नाटक में रोल के हिसाब से ही चीज़ें मिली थीं, उसी तरह अपनी लाइफ में भी हमें सब हिसाब से ही मिलता है। इसलिए जो नहीं मिला है, उसके लिए दुःखी होने की ज़रूरत ही नहीं है।"

लेकिन भाविक को हर्ष की बात समझ में नहीं आई। मुँह लटकाकर वह चल रहा था। दोनों शांत थे। समुद्र की लहरों की आवाज़ आ रही थी। वातावरण को थोड़ा हल्का करने के लिए हर्ष ने हाथ में पानी लिया और भाविक के मुँह पर छींटे मारने लगा। भाविक सिर नीचे करके हट गया। बेमन से भाविक ने भी हर्ष पर पानी उड़ाया। हर्ष का चश्मा भीग गया। चश्मा उतारकर हर्ष ने जेब से रूमाल निकाला।

"सॉरी यार। चश्मे खराब तो नहीं हुए न?" भाविक ने पूछा।

"नहीं, पोंछ लेता हूँ।" चश्मा पोंछते हुए हर्ष बोला, "तू भी तेरे चश्मे पोंछ ले।"

"मेरे चश्मे?!" भाविक ने आश्चर्य से पूछा, "मुझे कहाँ चश्मा हैं? चश्मे के साथ-साथ तेरे दिमाग में भी पानी घुस गया है क्या?"

"मैं तेरी दृष्टि के चश्मे की बात कर रहा हूँ। चश्मा साफ करके देखेगा तो तुझे भी कहीं दुःख लगेगा ही नहीं। बेकार का कम्पेरिज़न करके देखता है इसलिए तुझे दुःख होता है। जो तेरे पास है, जो तुझे आता है, तुझे उसका सुख नहीं है, लेकिन जो तेरे पास नहीं है, उसके असंतोष में ही तू दुःखी रहता है।" गंभीरता से हर्ष ने फिर भाविक को समझाने की कोशिश की।

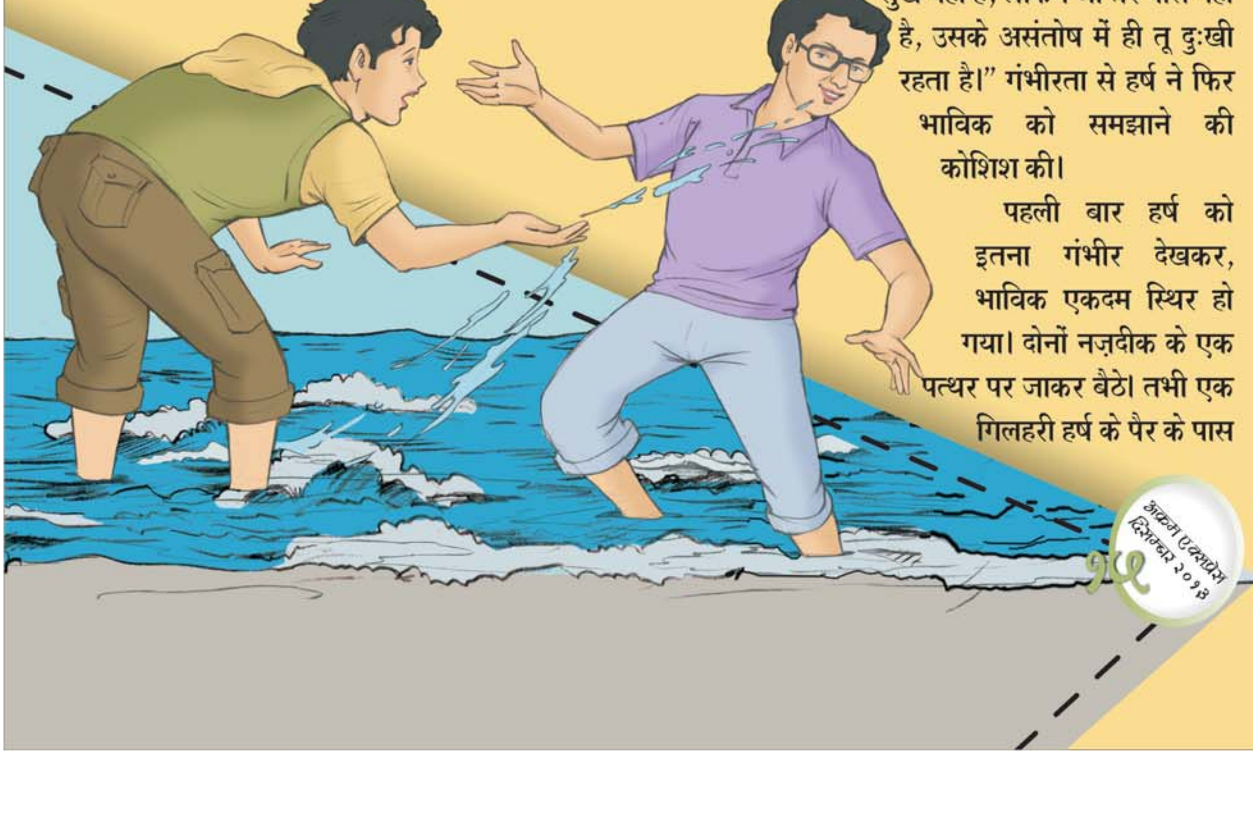

पहली बार हर्ष को इतना गंभीर देखकर, भाविक एकदम स्थिर हो गया। दोनों नज़दीक के एक पत्थर पर जाकर बैठे। तभी एक गिलहरी हर्ष के पैर के पास

आकर तेजी से दौड़ गई। गिलहरी देखकर हर्ष को एक कहानी याद आई।

भाविक के सामने देखकर हर्ष ने कहा, मालूम है भाविक, मेरी पॉज़िटिव दृष्टि का श्रेय मैं मेरे दादाजी को देता हूँ। उन्होंने ही मुझे जीवन में हमेशा पॉज़िटिव रहना सिखाया है। बहुत साल पहले उन्होंने मुझे एक कहानी सुनाई थी। एक जंगल में एक गिलहरी, बतख और खरगोश रहते थे। तीनों ही बहुत खुशमिज़ाजी थे और तीनों में बहुत अच्छी दोस्ती भी थी। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे उनकी मित्रता कटुता में बदलने लगी और वे बहुत दुःखी रहने लगे। जानता है क्यों? वे तीनों एक दूसरे से कम्पेरिज़न करने लगे।

बतख को लगा, "यह खरगोश और गिलहरी तो कैसे तेज दौड़ते हैं। मुझे तो इनकी तरह दौड़ना ही नहीं आता।"

बतख यह भूल गया कि उसे कितना अच्छा तैरना आता है। दौड़ने की होड़ में उसका पैर खराब हो गया और उसे तैरने में भी मुश्किल होने लगी। खरगोश भी गिलहरी की तरह पेड़ पर नहीं चढ़ सकने के कारण दुःखी रहने लगा और गिलहरी को तैरना नहीं आने का असंतोष रहता था। इस तरह तीनों ने अपनी मज़ेदार ज़िंदगी में कम्पेरिज़न करके खुद ने ही दुःख को निमंत्रण दिया। अच्छे मज़ेदार भोजन में कंकड़ डाले और दुःखी हुए।

अब भाविक को हर्ष की बात ठीक से समझ में आई। लाइफ में सब हिसाब से ही मिलता है। यह समझ में आया। और अपनी उल्टी दृष्टि का चश्मा भी पहचाना।

रात हो गई थी। घर के गेट के पास आकर भाविक बोला, "कल शाम को आइस्क्रीम पार्टी।"

"पार्टी?!" हर्ष ने आश्चर्य से पूछा।

"क्यों भूल गया? इंग्लिश में सबसे ज्यादा मार्क्स आए हैं, उसकी पार्टी!"

हर्ष ने मीठी स्माइल दी और अपने घर की तरफ चलने लगा।

पॉज़िटिविटी का पावर

लक्ष्मीचंद के घर वैभव की कोई कमी नहीं थी। पानी माँगो, वहाँ दूध मिले! जितना घर वैभव शाली, उतना ही खानदान भी अच्छा। परिवार में कभी भी किसी को पैसे की तकलीफ पड़े तो वह लक्ष्मीचंद के घर का दरवाजा खटखटाता और खाली हाथ कभी भी वापस न जाता।

लेकिन समय को बदलते देर कितनी? जैसे दिन के बाद रात आती है, उसी तरह लक्ष्मीचंद के व्यापार में भी संजोग बदले। अचानक से व्यापार में बहुत नुकसान हो गया।

खूब वैभव भोगनेवाले लक्ष्मीचंद ने ऐसे दिनों की तैयारी नहीं कर रखी थी। अचानक ही इतना अधिक नुकसान होने के कारण, वह टूट गए। मानसिक तनाव के कारण उन्हें ऐसे नकारात्मक विचार आने लगे कि "इस विकट परिस्थिति से कभी बाहर नहीं निकल सकूँगा, मैं तो बिल्कुल बरबाद हो गया।" इसके फलस्वरूप वह और भी अधिक परेशानियों में डूबते जा रहे थे।

एक दिन, वह शहर के बगीचे में सिर पर हाथ रखकर गुमसुम बैठे थे। तभी एक वृद्ध उनके पास आए। और खूब नरमाई से उन्होंने लक्ष्मीचंद से पूछा, "तुम्हें कुछ परेशानी है, ऐसा लग रहा है।"

"पूरे साल मैने मुश्किलों का सामना यह सोचकर किया कि ज़रूरत पड़ेगी तो मेरे पास पैसे हैं। लेकिन यह पैसे तो वास्तव में थे ही नही। यह तो काल्पनिक ही थे। तो मुश्किलों का सामना करने में मेरी मदद किसने की?"

लक्ष्मीचंद ने अपनी पूरी कहानी उन्हें सुनाई। मुँह पर हल्की मुस्कुराहट के साथ वृद्ध बोले, "मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।"

ऐसा कहकर उन्होंने जेब से एक चैक निकाला। ऊपर की जेब से एक पैन निकाला, चैक में लक्ष्मीचंद के नाम के साथ एक रकम लिखी। फिर दस्तखत करके चैक लक्ष्मीचंद के हाथ में दिया और बोले, "आज से ठीक एक साल के बाद मैं इसी जगह आपसे मिलूँगा। तब तुम मुझे मेरे पैसे वापस कर देना।"

ऐसा कहकर वृद्ध, वहाँ से चले गए। लक्ष्मीचंद को उनके साथ दूसरी कोई बात करने का मौका ही नहीं मिला। लक्ष्मीचंद स्तब्ध होकर उन्हें जाते हुए देखते रहे। कोई साक्षात् भगवान का रूप लेकर धरती पर आए हों, ऐसा उन्होंने अनुभव किया।

चैक की रकम और दस्तखत देखकर लक्ष्मीचंद दंग रह गए। चैक पाँच लाख रुपए का था और दस्तखत थे, पुरुषोत्तम शाह के। पुरुषोत्तम शाह मतलब उस समय के सबसे श्रीमंत और धनाढ्य व्यक्ति। लक्ष्मीचंद की आँखों से खुशी के आँसू निकल पड़े। चैक को सिर से लगाकर उन्होंने मन ही मन भगवान का बहुत उपकार माना।

बार-बार पाँच लाख रुपए के चैक को देखकर उनमें हिम्मत आने लगी, "व्यापार करने की सूझ और शक्ति तो मुझ में है ही! फिर से मेहनत करके मैं मेरा व्यापार पहले जैसा ही समृद्ध बना दूँगा।"

साथ ही साथ उन्होंने यह भी तय किया कि "व्यापार के पैसे से ही मैं अपना कर्ज चुकाऊँगा। मुझे विश्वास है, कि मैं थोड़े समय में ही सारा कर्ज चुकता कर दूँगा। यह पैसे तो मेरे पास आ ही गए हैं। लेकिन यह चैक मैं अभी नहीं भुनाऊँगा।

“नेगेटिव चिंतवना से मैं नुकसान में डूब गया था और पॉज़िटिव चिंतवना से मैं उस नुकसान से बाहर निकल सका।”

ज़रूरत पड़ेगी तब काम में लूँगा। बाकी तो मेरी होशियारी से ही इस परिस्थिति से बाहर निकलूँगा। मैं ज़रूर निकलूँगा.... निकल कर ही रहूँगा....”

ऐसी पॉज़िटिव दृष्टि के साथ लक्ष्मीचंद फिर से व्यापार में कूद पड़े। हिम्मत आने से लक्ष्मीचंद को नुकसान से बाहर निकलने के रास्ते और उपाय भी सूझने लगे। थोड़े ही समय में उन्होंने अपना सार कर्ज चुका दिया। इतना ही नहीं, उनके व्यापार का भी बहुत विकास हुआ।

ठीक एक साल बाद, लक्ष्मीचंद बिना भुना हुआ चैक लेकर बगीचे में गए। थोड़ी देर में वह वृद्ध भी वहाँ आ गए। लक्ष्मीचंद उनसे अपनी सफलता की बात कहने जा ही रहे थे, तभी एक नर्स पीछे से दौड़ती हुई आई।

वृद्ध की बाहें पकड़कर बोली, “ओह, आज मैंने इन्हें पकड़ लिया। यह आपको परेशान तो नहीं कर रहे न?” नर्स ने लक्ष्मीचंद से पूछा, और फिर बोली, “वर्षों पहले यह अपना मानसिक संतुलन खो बैठे हैं। और तब से ये सभी से कहते फिरते हैं कि वे पुरुषोत्तम शाह हैं और सभी को गलत-गलत चैक देते रहते हैं।” और ऐसा कहकर नर्स उन वृद्ध को पकड़कर ले गई।

लक्ष्मीचंद के आश्चर्य का पार नहीं था। पैरों के तले जैसे ज़मीन खिसक गई हो। एक पल चैक की तरफ ताका और बाद में वे सोचने लगे, “पूरे साल मैंने मुश्किलों का सामना यह सोचकर किया कि ज़रूरत पड़ेगी तो मेरे पास पैसे हैं। लेकिन यह पैसे तो वास्तव में थे ही नहीं। यह तो काल्पनिक ही थे। तो मुश्किलों का सामना करने में मेरी मदद किसने की?”

बहुत सोचने पर उनके अंदर से ही जवाब मिला कि, “पैसे मिलने से उनकी विचारधार ने जो पॉज़िटिव मोड़ लिया, उसके कारण मुझमें आत्मविश्वास का फिर से संचार हुआ। और मैं मुश्किलों का निडरता से सामना करके सफलता पूर्वक उस से बाहर निकलने में समर्थ हुआ। नेगेटिव चिंतवना से मैं नुकसान में डूब गया था और पॉज़िटिव चिंतवना से मैं उस नुकसान से बाहर निकल सका।”

और उस दिन से लक्ष्मीचंद को दृढ़ श्रद्धा बैठ गई कि जैसा सोचते हैं, वैसा ही हो जाता है। उल्टा सोचने से तो सीधा भी उल्टा हो जाता है और सीधा सोचें तो उल्टा भी धीरे-धीरे सीधा हो जाता है। इसलिए हमेशा पॉज़िटिव सोचना चाहिए।

लक्ष्मीचंद सेठ ने तो हमेशा पॉज़िटिव रहने का निश्चय किया और आपने?

पूज्यश्री समक्ष वड़ौदा के बच्चों ने प्रस्तुत किए हुए कल्चरल प्रोग्राम की झलक

भरूच में मनाए गए परम पूज्य दादाश्री के १०६ वें जन्मजयंति महोत्सव के दौरान बालविज्ञान के पुस्तक और भक्तिपद की सी.डी. का विमोचन करते हुए पूज्यश्री

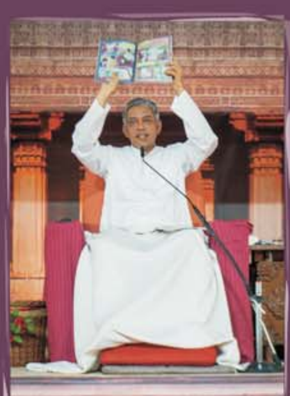

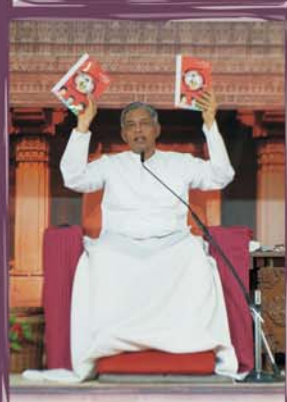

अक्रम एक्सप्रेस "कवर पेज प्रतियोगिता" के विजेता

नामः पटेल धैर्य एच.

शहरः भरूच

उम्रः ११

Akram Express

November 2013
Year : 1, Issue : 9
Conti. Issue No.:9

BAL VIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

जन्मजयंति महोत्सव की शुरूआत शुभारंभ गीत और डान्स से हुई।

चिल्ड्रन पार्क में रंगमंच पर भरूच के विविध स्कूल के विद्यार्थियों ने नाटक, नृत्य और गीत द्वारा पर्फार्म किया।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press Amba offset:- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.